RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 41 अंक 14 हल्द्वानी सम्वत् 2082 सोमवार 8 सितम्बर 2025 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

गोरीगंगा के रुख से रिलकोट गाँव को खतरा

कार्यालय प्रतिनिधि

जोहार। आपदा के घाव उत्तराखण्ड में इतने गहरे हैं कि पुराने भरे नहीं पाते कि नये उपज जाते हैं। इस बार उत्तरकाशी के धराली में हुए भारी नुकसान के बाद चमोली के थराली में ऐसा ही हुआ जब बादल फटने से नदी-गदेरे उफना गये और अपने साथ करोड़ों का बना-बनाया कारोबार चौपट हो गया। इसके अलावा कई जगह प्रकृति का कहर हुआ है। जोहार क्षेत्र में सड़क-पुल टूटने से आवाजाही में आफत मच गई और माइग्रेशन वाले दूरस्थ ग्रामों को दिक्कत का सामना करना पड़ा है। मल्ला जोहार क्षेत्र का ऐसा ही रिलकोट गाँव गोरी गंगा के बढ़ते जलस्तर से खतरे में आ गया। मल्ला जोहार विकास समिति के अध्यख श्रीराम सिंह धर्मशक्तू बार बार शासन-प्रशासन से अनुरोध कर चुके हैं कि तत्काल कार्रवाई करते हुए उक्त गाँव को गोरीगंगा से बचाने के लिये चैकडैम का निर्माण कार्य पूरा करवाया जाए।

हिमालयन प्रदेशों के परिप्रेक्ष्य में तकनीकी सलाह

त्रिभुवन सिंह पांगती
पूर्व अपर महानिदेशक
(एडीजी)
खान मंत्रालय
(भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण),
भारत सरकार
देहरादून

भू-गर्भीयता के अत्यधिक विवर्तनिक क्षेत्रण (highly tectonic region of himalaya) में किसी भी सतत विकास में भूविज्ञान एक प्रमुख और महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हिमालयी भू-भाग में किसी भी परियोजना के शुरू होने से पहले हिमालय में लगातार भूस्खलन और विस्तृत भू-भाग की संरचना की जानकारी तथा इनसे होने वाली समस्यों को गंभीरता से देखा जाना चाहिए।

सबसे पहले चार धाम के आल वेदर रोड (all weather road) का प्रस्ताव, उत्तराखण्ड जैसे राज्य में जिसका सम्पूर्ण क्षेत्र भूगर्भीय अतिसम्वेदनशील हिमालयी भू-भाग में स्थित है इस प्रकार के प्रस्ताव प्रासंगिक लगते है। इस प्रकार के प्रस्ताव से यह तो स्पष्ट होता है कि प्रस्ताव बिना किसी अनुभवी भूवैज्ञानिक विशेषज्ञ वाले विभाग से राय लिये बगैर ही अनुमोदित की गई है।

ऐसे भू-भाग में आल वेदर रोड़ की परिकल्पना एक सपना ही है एवं इस तरह के भूगर्भीय अतिसम्वेदनशील क्षेत्रों में असम्भव है।

यह वास्तव में दुर्भाग्यपूर्ण है कि निजी कम्पनियां कई अन्य क्षेत्रों में सूक्ष्म बिजली परियोजनाओं और संचार एवं अन्य इंफरास्ट्रचरल परियोजनाओं के निर्माण में शामिल हो रही हैं जिन्हें भूवैज्ञानिक और इलाके की भू-भाग की स्थिति से सम्बन्धित जानकारी के अभाव में इस तरह के इलाके में वे सभी परियोजनाएं पूरी तरह से उत्तराखण्ड राज्य में विफल हो रही है।

शेष पृष्ठ 3 पर

भारत के मीलपत्थर

क्यों भुला दिया शुन:शेप को इस तरह

सूर्यकान्त बाली

पर भुला ही दिया, और इससे बढ़कर देश की विवेकशक्ति की विडम्बना क्या होगी? शुन:शेप को कोई याद नहीं करता, न यज्ञ वाले, न शोध वाले और न ही साहित्य वाले, बल्कि शुन:शेप वह शख्त है जिसने इस देश के समाज को झकझोर कर रख दिया था, ऐसे सूक्त बनाकर जिसमें कारुणिकता अपने शिखर पर है, काव्य सौन्दर्य अपने शिखर पर है और उनके माध्यम से शिखर पर है विश्वामित्र का व्यक्तित्व जिन्होंने अजीगर्त के बेटे शुन:शेप को हिम्मत करके मौत के कुएं से निकाला, निकाला ही नहीं उसे अपना शिष्य भी बना लिया और फिर बना दिया अपना बेटा। और इस कृतज्ञ बेटे ने भी अपना नाम शुन:शेप आजीगर्त से बदलकर रख लिया देवरात वैश्वामित्र। पर समाज की रीत तो अपनी निराली होती है। उसने देवरात नाम को साहित्य से जो नत्थी कर रख छोड़ा, पर खुद शुन:शेप नाम ही पुकारता रहा, वह नाम जिसका मतलब है कुत्ते की दुम और जो नाम शुन:शेप के माँ बाप ने बड़े लाड़ से रखा था।

क्या जरूरत है इस लम्बी चौड़ी भूमिका की? जरूरत है। जरूरत इसलिए है कि जो विलक्षण काम विश्वामित्र ने घोर बौद्धिक तप के बाद किया, वही काम बालक शुन:शेप ने अपूर्व मनोव्यथा के भयंकर उन्माद के क्षणों में कर दिया। पर विश्वामित्र को तो हमने सिर आंखों पर बिठा रखा है, ठीक ही बिठा रखा है, पर गरीब शुन:शेप को हम भूल बैठे?क्यों?

इसलिए इस लम्बी पड़ताल-भूमिका के बाद अब जरूरत है उस अबोध बालक शुन:शेप की कहानी जानने की जिसे इतरा नामक एक शूद्रा के विद्वान पुत्र महिदास ऐजरेय ने अपने ग्रन्थ ऐतरेय ब्राह्मण में (7.13-18) भावी पीढ़ियों के लिए सुरक्षित कर दिा है। शुन:शेप का दुर्भाग्य कि वह अपने पिता अजीगर्त का मझोला बेटा था जिसे न पिता का संरक्षण मिला और न मां की ममता। उसका दूसरा दुर्भाग्य यह कि वह अयोध्या के राजा सत्यव्रत त्रिशंकु के पुत्र हरिश्चन्द्र के राज्यकाल में जनमा, वह हरिश्चन्द्र जिन्होंने इतिहास में सत्यवादी होने का खिताब तो हासिल कर लिया, पर सत्य को लचकीला बनाकर मनुष्य का हितैषी बनाने के बजाय उसे पत्थर की तरह सख्त बनाकर मनुष्य को ही उस पर बार-बार कुर्बान कर दिया।

आज से सात हजार साल पहले, यानी त्रेतायुग के शुरुआती वर्षों की बात है। सत्यवादी हरिश्चन्द्र ने वरुण की उपासना कर इस शर्त पर पुत्र पा लिया कि बड़े होने पर वह पुत्र को वरुण की भेंट चढ़ा देगा। पुत्र पैदा हुआ। उसे रोहित कहा गया। जब वह समझदार हुआ, समझ गया कि उसका पिता उसकी बलि दे देगा, तो वह एक दिन अचानक जंगल में भाग गया। अयोध्या राजवंश के कुलगुरु वशिष्ठ ने व्यवस्था दी कि वरुण को बलि देनी होगी, भले ही वह किसी स्थानापन्न व्यक्ति की क्यों न हो। ढूंढ शुरू हुई तो निर्धन ब्राह्मण अजीगर्त पकड़ में आ गया जो राजा से पर्याप्त द्रव्य लेकर अपने मझले बेटे शुन:शेप को बलि के लिए बेचने को तैयार हो गया और उसमें उसकी पत्नी की भी सहमति थी।

शुन:शेप को खम्भे से बांध बलि के लिए वैसे ही तैयार किया गया जैसे कसाई किसी जानवार को मारने के लिए उसे जकड़ देता है। सामने मौत खड़ी थी तो शुन:शेप चिल्ला उठा। उसकी चीख वैसे मन्त्रों के रूप में प्रकट हो गई जैसे महर्षि बाल्मीकि का शोक कामक्रीड़ा में मगन क्रौंच पक्षी को शिकारी के हाथों मारा जाता देख कविता के रूप में प्रकट हो गया था। ठीक उसी क्षण विश्वामित्र का, गायत्री मन्त्र के अद्भुत रचियता, संकल्पशक्ति के धनी और धुन के पक्के विश्वामित्र का प्रवेश हुआ और उन्होंने देवराज वसिष्ठ और सत्यवादी हरिश्चन्द्र को फटकारते हुए शुन:शेप को छुड़ा लिया और अपना शिष्य और फिर अपना बेटा बना लिया।

तो यकीनन एक घृणित हालात में से उबरे शुन:शेप का भारत की सभ्यता का योगदान यह हुआ कि उसने अपनी विराट भावुकता में से पहली बार मन्त्रों का एक सूक्त ठीक वैसे ही रचा जैसे विश्वामित्र ने अपने तप के बल पर इस देश को पहली वैदिक ऋचा गायत्री मन्त्र के रूप में दी। विश्वामित्र ने अपनी जीवन में महज दो मन्त्र रहे थे जिनमें से एक गायत्री मन्त्र था। शुन:शेप ने इस देश को पहली बार सूक्त बनाकर दिया और पहली बार कुल मिलाकर उसने आठ सूक्तों की रचना की। उसके सूक्त कितने हैं, यह सवाल महत्व का नहीं है। महत्व की बात यह है कि उसने देश को पहली बार एक सूक्त देकर सूक्त लिखना सिखाया और बलि से बचने के लिए जो सूक्त ऋग्वेद और (1.25) जो गाए वे तो अद्भुत हैं। क्यों न दो मन्त्रों का एक जायजा लिया जाये। कल्पना कीजिये एक ऐसे बालक की जो मारे जाने के लिए तैयार कर दिया गया हो, हमेशा के लिए माँ बाप से बिछुड़ रहा हो तो ठीक ऐसे मौके पर उसे किसकी याद आयेगी? माँ बाप की ही तो। शुन:शेप भावनओं की जबर्दस्त आर्द्रता से आहत होकर

शेष पृष्ठ 5 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

नेताओं का आक्रामक होना

राजनीति में आक्रामक नेता हमेशा से रहे हैं लेकिन वर्तमान में नेतागण जिस प्रकार से पैने दिखाई दिखाई दे रहे हैं उससे सन्देह होने लगा है कि आंखिर यह चाहते क्या हैं। एक विचारधारा के साथ आगे बढ़ना, अपने समाज को मजबूती देना, अपने क्षेत्र को विकास के पथ पर ले जाना, सबको न्याय दिलाना, यही सब जनप्रतिनिधि के लक्षण होने चाहिये लेकिन इसके उलट जब चाहे पार्टी बदल लेना, जब चाहे किसी पर भी आरोप लगा देना, जब चाहे किसी से वसूली करना या डराना-धमकाना, जब चाहे आन्दोलन करते हुए अपना दबदबा कायम करना जैसे करतब देखने को मिल रहे हैं। ऐसी गन्दगी क्यों पनपने दी जाए? क्या जनता इसके लिये जागेगी? सारे नेता, सारी पार्टियां अपने को ईमानदार बताती हैं लेकिन इनकी सच्चाई को जानने वाली भीड़ क्या करती रही है और आगे क्या करेगी यह देखने की बात है। यह भी बड़ी सच्चाई है कि पिछड़ेपन के अलावा दबी-कुचली भीड़ सिर्फ भेड़चाल चलती है, उसे यह सोचने भर का उल्लास नहीं है कि वह भले सपने देख सके। इस भीड़ को किसी तरह अपने प्राण बचाने हैं।

उत्तराखण्ड की राजनीति में भी हालात ऐसे हो चुके हैं। अपने साथ सौतेला व्यवहार देखकर पृथक पर्वतीय राज्य बनाने के लिये जो नेता आक्रामक थे, वह पूरे परिदृश्य से बाहर हैं। उनका नाम जरूर लिया जाता है लेकिन प्रदेश में दबदबा रखने वाले ज्यादातर वह हैं जो उत्तराखण्ड प्रदेश के विरोधी थे और राज्य बनने के बाद बहुत चतुराई से अपने को स्थापित कर चुके हैं। इन्हें समाज, ग्राम, प्रदेश से मतलब नहीं है बल्कि अपने काम निकालने के लिये इतने आक्रामक हो चुके हैं कि सत्ता की चाबी चाहे जिसके हाथ हो यह उसके करीब हो जाते हैं। सारे आरोपों से घिरने के बाद भी इनका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता क्योंकि यह जानते हैं सज-संवरकर निकलने से भ्रम अधिक फैलाया जा सकता है। इनकी असलियत इनके लिवास और इनकी खुरापातों में छुपी हुई है। किसी प्रकार का दर्जा पाकर और सोशल मीडिया पर लोगों को भ्रमित करते हुए हथकण्डे अपनाते हैं। इसके अलावा बड़े नेताओं की सच्चाई भी जनता को जाननी चाहिये। हरक सिंह रावत, त्रिवेन्द्र रावत, तीरथ रावत, उमेश कुमार, महेन्द्र भट्ट सहित तमाम नेता जिस प्रकार से बयान दे रहे हैं वह मात्र गुदगुदाने की बात नहीं बल्कि गम्भीर मामले हैं। आंखिर नेता इसी लिये आक्रामक होते जा रहे हैं? और जब फंसते या बचते हैं तो अपनी भड़ास निकाल लेते हैं। जनता वहीं की वहीं ताकती रहती है।

देश-विदेश की प्रमुख घटनाएं

भावनाओं को ठेस पहुंचाने का अधिकार नहीं

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने 'इंडियाज गॉट लेटेंट' के प्रस्तोता समय रैना सहित 5 सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर को दिव्यांग और दुर्लभ आनुवांशिक विकारों से पीड़ित व्यक्तियों का उपहास उड़ाने के लिये अपने पॉडकास्ट या कार्यक्रम में बिना शर्त माफी मांगने का आदेश देते हुए टिप्पणी की कि व्यावसायिक फायदे वाले प्रतिबन्धित भाषण मौलिक अधिकार के अन्तर्गत नहीं आते हैं।

इमरान पार्टी के नेताओं को सजा

लाहौर। पाकिस्तान की एक आतंकवाद रोधी अदालत ने इमरान खान की पार्टी के 75 नेताओं और कार्यकर्ताओं को 9 मई 2023 के दंगों के दौरान सत्तारूढ़ पीएमएल-एन के एक वरिष्ठ नेता के घर पर हमले का दोषी करार देते हुए तीन से दस साल कारावास की सजा सुनाई है।

श्रीलंका के पूर्व राष्ट्रपति को जमानत

कोलम्बो। श्रीलंका की एक अदालत ने सरकारी धन के दुरुपयोग के मामले में पूर्व राष्ट्रपति विक्रमसिंघे को जमानत दी। वे इस मामले में हिरासत में थे। कड़ी सुरक्षा और अदालत परिसर के बाहर प्रदर्शनों के बीच उन्होंने राष्ट्रीय अस्पताल की आईसीयू से डिजिटल माध्यम से सुनवाई में भाग लिया।

चीन ने की जापान के बयान पर आपत्ति

बीजिंग। चीन के 80वें विजय दिवस में अन्य देशों से शामिल न होने के जापान के आह्वान को चीन ने गम्भीरता से लेते हुए गहरी नाराजगी जताई है। जापान ने दूतावासों के माध्यम से देशों से आह्वान किया है कि चीन के विजय दिवस समारोह में न जाएं क्योंकि यह जापान पर विजय के उपलक्ष्य में आयोजित होता है और जापान के विरुद्ध है।

हल्द्वानी में नाट्य कार्यशाला

हल्द्वानी। आनन्दा अकादमी, धानमिल डहरिया में एक महीने की नाट्य कार्यशाला जारी है। जिसमें 40 प्रशिक्षार्थियों को दो ग्रुप में प्रशिक्षण दिया जा रहा है। कार्यशाला में चन्दन बिष्ट, रचना बिष्ट, सुदर्शन जुयाल, दानिश इकबाल सभी एनएसडी, डीएन भट्ट शैलनट व भूपेन्द्र बिष्ट आनन्दा अकादमी जुटे हैं।

फसक

दाज्यू, टोपी एक-दूसरे के सिर डालने वाले ठैरे

छात्र संघ चुनाव से पहले पढ़ाई का कच्चार हो जाता है बल

दाज्यू, हालचाल क्या बताएं। पंचायत चुनाव निपटते ही छात्र संघ चुनाव की तैयारी है। आप जानने ही वाले हुए कि छात्र संघ चुनाव से पहले पढ़ाई का कच्चार हो जाता है बल। बब्बन ने पहले सेमेस्टर में प्रवेश ले लिया है लेकिन वह कालेज जाने से डर रहा है। कह रहा था- 'कक्षा होती नहीं, बाहर नारे लगते हैं और सीटी बजाने वाले अलग से घूम रहे हैं।' दाज्यू, ऐसा कब तक चलेगा। दिन बीतते ही परीक्षा तैयारी होगी और बब्बन परीक्षा में क्या लिखेगा?

छात्रों का सड़क से कैम्पस तक बवाल फैला हुआ है। हल्द्वानी एमबीपीजी कालेज में छात्र गुटों का टकराव बढ़ता जा रहा है। ऐसे में पुलिस को लट्ठ चलाने पड़े। कालेज में 32 प्राध्यापकों की टीम सख्त जांच कर रही है बल। भगवान जाने इसके बाद भी कौन से छात्र हैं जो भिड़ने के लिये तैयार हैं। दाज्यू, लोहाघाट, चम्पावत, गंगोलीहाट तमाम कालेजों में अपनी मांगों को लेकर छात्र नेता धरना-प्रदर्शन कर रहे हैं। टनकपुर कालेज में तो अभाविप के दो गुट भिड़ गये बल। इसके बाद मामला शान्त करवाया गया। रुद्रपुर में छात्र नेता भयंकर चुनाव तैयारी में जुट गये हैं। काशीपुर में तो बड़े वाले होर्डिंग सजाकर नारे लगने लगे हैं। देहरादून की पूछो मत। कैम्पसों में तो झमाझम हो रही है, बस पढ़ाई की बात मत करो। अभी तक परीक्षाफल सुधार भी चल रहा है। सबको पता है कि टोपी एक-दूसरे के सिर डालने वाले ठैरे। छात्र नेताओं का क्या कहा जाए? कौन गुट, क्या गुट, किसका गुट? बच्चों का हुल्लड़ ठैरा। जो खाप से आया बक दिया, जो भे से आया हग दिया। भगवान सबकी भली करे।

अब हरकू दा को ही देख लो, दबादब बयान-पे-बयान दे रहे हैं। कह रहे हैं- 'मैंने भी लिये हैं। भाजपा में खनन वालों से डिमाण्ड होती है। संविदा वालों को मेहनत का नहीं मिल रहा है। नेताओं को तीन-चार पेंशन तक साथ साथ मिल रही हैं। जो लोग ग्राम प्रधान काबिल भी नहीं थे प्रदेश में विधायक मंत्री बन गये हैं।' दाज्यू, हरक सिंह रावत को गला फाड़कर नारेबाजी करते हुए देखा तो हमें कुछ समझ ही नहीं आया कि इन्हें क्या हो गया है। पहले कांग्रेस की ऐसी-तैसी कर दी उसके बाद भाजपा की भी.....। यह सब लगा धन्धा ठैरा। टोपी एक-दूसरे के सिर सिर डालने वाले ठैरे। पता नहीं हरकू दा अभी कितना और उजागर करने वाले हैं। दाज्यू, इतना तो मानना ही पड़ेगा कि हरक सिंह इन दिनों में रस-भात जैसे लग रहे हैं। भांग की चटनी ऊपर से। विधायक उमेश कुमार भी लट्ठ बजा रहे हैं। आने वाले दिनों का उत्तराखण्ड कैसा होगा यह सोचकर चरचरी लग रही है।

दाज्यू, बहुत लप्पू-झप्पू चल रही है दुनिया में। पिरयान कलियर क्षेत्र के भगवानपुर थाना क्षेत्र निवासी एक महिला के प्रेमी ने अपने चार दोस्तों के साथ मिलकर सामूहिक दुराचार कर डाला। दाज्यू, धर्मनगरी और इसके आस-पास तो पूछो मत.....। सिडकुल स्थित पेटागन मॉल के एक स्पा सेन्टर में सैक्स रैकेट का खुलासा हुआ है। स्पा संचालक दम्पत्ति मौके से फरार हो गये बल। 5 महिलाएं और 2 पुरुष पुलिस की गिरफ्त में हैं। काठगोदाम थाना क्षेत्र रहने वाली युवती से शादी का झांसा देकर छह माह तक दुष्कर्म हुआ बल। बाजपुर के सुल्तानपुर पट्टी मोहल्ला की रहने वाली विधवा महिला को शादी का झांसा देकर नौ लाख रुपये ठग लिये गये हैं।

-तुम्हारा भुली झकरुवा

गगन त्रिपाठी को लीडरशिप एक्सीलेंट अवॉर्ड

रामनगर/देहरादून। उत्तराखण्ड के युवा उद्यमी एवं प्लांट ऑर्बिट के संस्थापक गगन त्रिपाठी को उनके अभिनव कार्य, उत्कृष्ट नेतृत्व क्षमता और कृषि क्षेत्र में दिए जा रहे योगदान के लिए लीडरशिप एक्सीलेंस अवॉर्ड 2025 से सम्मानित किया गया।

यह सम्मान उत्तराखण्ड सरकार के कृषि मंत्री गणेश जोशी द्वारा सुर रहबर फाउण्डेशन के तत्वावधान में आयोजित एक विशेष समारोह में दिया गया। इस अवसर पर प्रदेश भर के सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधि और युवा उद्यमी उपस्थित थे।

सम्मान प्राप्त करते हुए गगन त्रिपाठी ने कहा कि यह पुरस्कार मेरा नहीं बल्कि मेरी पूरी टीम, किसानों और उन सभी पौध प्रेमियों का है जिन्होंने प्लांट ऑर्बिट के इस मिशन को सफल बनाने में सहयोग दिया। हमारा प्रयास है कि भारत में किसानों को नई दिशा मिले, पौधों के क्षेत्र में नवाचार हो और हरित अर्थव्यवस्था को मजबूती मिले। प्लांट ऑर्बिट देश भर के किसानों के सहयोग 200 से अधिक किस्मों के सक्युलेंट्स और पौधों को बढ़ावा दे रहा है। कम्पनी का उद्देश्य न केवल पौधों और सक्युलेंट्स की गुणवत्ता पूर्ण आपूर्ति करना है बल्कि किसानों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाना और भारत के हरित उद्यमशीलता को नई ऊँचाईयों तक पहुँचाना भी है।

आपके पत्र

होनहार नवयुवक नशीली वस्तुओं से दूर रहें

कहा जाता है कि होनहार नवयुवक की भावी पीढ़ी के कर्णधार होते हैं इन्हीं के कन्धों पर देश का भविष्य निहित होता है 'होनहार विरवान के होत चिकने पात' लेकिन यह तभी सम्भव है जब ये नवयुवक अच्छे संस्कारवान, परिश्रमी एवं चरित्रवान हों। माता-पिता की आज्ञा पालन, गुरुजनों के आदर्श शिष्य ही आगे भविष्य में प्रगति कर सकते हैं। प्राय: उपरोक्त स्थिति में अच्छा मार्गदर्शक तथा अच्छाा संत्संग मिलने में ही ये आगे होनहार नेता व महान व्यक्ति बन सकते हैं। यदि कहीं गलत संगत में पड़कर ये युवक नशीली वस्तुओं का तथा धूम्रपान व मद्यपान आदि के शिकार हो जाएं तो इनका भविष्य अन्धकारमय रहता है।

अतएव इन्हीं नवयुवकों से अपेक्षा की जाती है कि ऐसे दुष्ट लोगों की संगति से दूर रह कर उन नशीली वस्तुओं का सेवन से दूर रहें, क्योंकि यह मनुष्य जीवन को अन्धकार में धकेल देता है। अत: समझदारी इसी में है कि वह इन नशीली वस्तुओं से दूरी बनाएं रखें। अपने अच्छे भविष्य को बनाए रखने में प्रगतिशील रहें। अपने भविष्य के लिए अपनी शिक्षा को बेहतर बनाए रखने में परिश्रमशील व संस्कारवान बने रहने का यशाशीघ्र प्रयास करें तथा इसी मं अपना हित सकझें।

'बरु भल वास नरक कर ताता, दुष्ट संग जनि देइ विधाता' इसी सिद्धान्त को ध्यान में रखकर हमेशा निम्न बातों का ध्यान रखें- 1. अपने माता-पिता एवं गुरुजनों के द्वारा दी गई शिक्षा का पालन करें, अपनी पढ़ाई लिखाई में मन लगाएं। 2. हमेशा संस्कारवान धर्मवान आचरण का अनुपालन करें। अपने से बड़े लोगों का सदा सम्मान करें। 3. कभी भी दुष्ट जनों की संगत न करें उनसे दूरी बनाएं रखें। 4. धूम्रपान व मद्यपानी जैसी नशीली वस्तुओं के सेवन से दूरी बनाएं रखें। 5. खेलकूल, व्यायायम आदि में अधिक रुचि लें। आशा है सभी युवकगण इन सिद्धान्तों का पालन करेंगे।

-नन्दाबल्लभ पाण्डे
वरिष्ठ नागरिक, ज्योलीकोट(नैनीताल)

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

हिमालयन प्रदेशों.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

इन क्षेत्रों की भू-संरचना विभिन्न हैं जोकि स्थान-स्थान पर भिन्न भिन्न होती है।

भूगर्भ्य जियोहैजड एवं भूगर्भीय संरचना का विस्तृत अध्ययन, इस प्रकार के भूगर्भीय अतिसम्वेदनशिल क्षेत्रों में किया जाना अति आवश्यक हैं। यह अध्ययन किसी भी तकनीकी विशेषज्ञता रखने वाली सरकारी डिपार्टमेंट या अन्य तकनीकी एजेंसियों जिन्हें हिमालयन क्षेत्रें में कार्य करने का विशेषज्ञता प्राप्त हो, कराया जाना अतिआवश्यक है जिसको किसी भी कीमत पर नज़रअंदाज नहीं किया जाना चाहिऐ।

उत्तराखण्ड राज्य में सभी राष्ट्रीय राजमार्गों की स्थिति, जो निर्माणाधीन और पूर्ण होने के चरण में हैं, सभी मौसमों में लगातार गम्भीर भूस्खलन की समस्याओं का सामना कर रहे हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि कटी हुई ढलानों को स्थल की भूगर्भीय परिस्थितियों के अनुसार संरक्षित नहीं किया जा रहा है और उचित निवारक उपायों का पालन नहीं किया जा रहा है। यहाँ तक कि कई पुलों को भी जमीनी भूगर्भीय स्थितियों के बारे में कम जानकारी के कारण ध्वस्त हो रहे हैं।

उत्तराखण्ड राज्य में चल रही प्रमुख परियोजनाओं मै भी जैसे सड़क, रेलमार्ग, हाईडिल परियोजनाएं, ईन्फरास्कचरल परियोजनाएं और पुलों के निर्माण के दौरान गम्भीर खतरों/भूस्खलन की समस्याओं का सामना करना पड् रहा है क्योंकि विशेष रूप से इस प्रकार के टेक्टोनिक इलाके में विशेषज्ञता की कमी है। इसके अलावा किसी विशेषज्ञ (भूवैज्ञानिक) की सलाह नहीं ली जा रही है और प्रसि) सरकारी विभाग द्वारा एक उचित तकनीकी निगरानी/समीक्षा, तकनीकी विशेषज्ञता (भूविज्ञान) रखने वाले, ऐसे हिमालयी इलाके में काम करने से सभी चिन्ताओं के लिए ज्ञात कारणों के रूप में पूरी तरह से टाला या अनदेखा किया जा रहा है। अब से ऐसे भू-भाग की समस्याओं को इसकी बेहतर सम्भावनाओं में गम्भीरता से देखा जाना चाहिए। सभी बुनियादी ढांचे और संचार परियोजनाओं के लिए सभी तकनीकी समीक्षा और सलाह प्रदान करने के लिए प्रख्यात विशेषज्ञों की एक उच्च स्तरीय समिति भी तुरन्त स्थापित करने की आवश्यकता है विशेष रूप से हिमालयी क्षेत्र में सतत विकास के लिए।

वर्ष 2013 में उत्तराखण्ड में तबाही के लिए मैंने 2014-15 में केदारनाथ टाउनशिप क्षेत्र के पुनर्गठन के लिए एक व्यापक उपचार योजना की सिफारिश की थी। जिसे उस समय सरकार द्वारा विधिवत स्वीकार कर लिया गया था तथा तत्कालीन सरकार द्वारा लागू भी किए जा रहे थे।

परियोजना निर्माण और क्रियान्वयन में भूविज्ञान की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, विशेषकर कठिन भू-भाग में संसाधनों के सतत विकास के लिए भारी संरचनाओं के लिए स्थल मूल्यांकन, असफलताओं की सम्भावना का आंकलन करने और उन्हें रोकने हेतु आवश्यक सुरक्षा उपाय अपनाने में अहम योगदान देता है। यह सभी बड़े प्रोजेक्ट्स जैसे सिंचाई, जलविद्युत परियोजनाएँ, राजमार्ग, रेलवे तथा अन्य बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के लिए अत्यन्त प्रासंगिक है, खासकर हिमालयी राज्यों के उच्च भूकम्पीय क्षेत्रों में। ऐसे प्रोजेक्ट्स में तकनीकी व आर्थिक निर्णयों में इंजीनियरिंग भूविज्ञान का विशेष महत्व है।

विभिन्न विकासात्मक गतिविधियों से जुड़े पर्यावरणीय पहलुओं की पहचान करना आवश्यक है। एक सन्तुलित दृष्टिकोण अपनाना चाहिए जो विकास और पर्यावरण दोनों की जरूरतों को ध्यान में रखे। मेरा मानना है कि पर्यावरणीय आवश्यकताओं को नज़रअंदाज़ कर किया गया कोई भी विकास आत्मघाती है।

आज हम हिमालयी क्षेत्रों में भूस्खलन, बाढ़ और भूकम्प जैसी आपदाओं के गम्भीर प्रभाव देख रहे हैं। इनमें से भूस्खलन सबसे सामान्य आपदा है। किसी भी विकासात्मक परियोजना के आरम्भ से पहले हिमालय में बार-बार होने वाले भूस्खलनों की समस्या को व्यापक दृष्टिकोण से देखना आवश्यक है। पहाड़ी ढलानों की अवैज्ञानिक कटाई या भारी वर्षा से अत्यधिक जल-संतृप्ति के कारण संतुलन बिगड़ जाता है और भूस्खलन होता है। जब ये भूस्खलन मानव बस्तियों, सम्पत्तियों और यातायात मार्गों को प्रभावित करते हैं तो स्थिति गम्भीर और चिन्ताजनक हो जाती है।

हिमालय में मानव बस्तियों को प्रभावित करने वाले भूस्खलन दो मुख्य प्रकार के होते हैं-

1. वे, जो नदियों, धाराओं और खड़ी ढलानों के किनारे स्थित बस्तियों को प्रभावित करते हैं अचानक वर्षा से नदियाँ और धाराएँ तेज बहाव में आकर इन बस्तियों को काट देती हैं।
2. वे, जो बड़े पैमाने पर विकासात्मक गतिविधियां जैसे सड़क निर्माण, परियोजनाओं का निर्माण और खनन के कारण होते हैं।

मानव निर्मित संरचनाओं से प्राकृतिक जलधाराओं और मौसमी नालों का बहाव अवरुद्ध हो जाता है, जिससे जल का प्रवाह बदल जाता है। नदी या धारा द्वारा ढलान के आधार का कटाव, ढलान सुरक्षा की कमी, जल निकासी की अनुपस्थिति और असुरक्षित/अयोजित निर्माण एंव भारी व नियन्त्रण से बाहर ब्लास्टिगं, ये सभी कारक भूस्खलन और पहाड़ी क्षेत्रों में गंभीर धँसाव के मुख्य कारण हैं।

भूस्खलन, वर्षा, भूकम्प और हिम पिघलन से शुरू हो सकते हैं, जिनमें वर्षा सबसे आम कारक है। एक ही वर्षा घटना सैकड़ों भूस्खलनों को जन्म दे सकती है, जैसा कि 15-16 जून 2013 को उत्तराखण्ड में हुआ था, जब अत्यधिक वर्षा ने सैकड़ों भूस्खलन और नदी किनारों के कटाव को जन्म दिया, जिससे हजारों लोगों और यात्रियों की मृत्यु हुई। उत्तराखण्ड और हिमाचल हर वर्ष वर्षा-जनित भूस्खलनों का भारी सामना करते हैं, जिसमें सैकड़ों लोग मारे जाते हैं और हजारों विस्थापित होते हैं।

अयोजित शहरी विस्तार ने आवासीय क्षेत्रों को गम्भीर रूप से प्रभावित किया है और पर्यावरणीय खतरों को बढ़ाया है। तीर्थयात्रा, पर्यटन और विकास गतिविधियों में वृद्धि के साथ सुरक्षित और उपयुक्त भूमि-उपयोग स्थलों का चयन भविष्य में और कठिन हो जाएगा।

भूकम्प भी एक सक्रिय भूवैज्ञानिक प्रक्रिया है, जिसमें दरारों और भ्रंशों के कारण क्षेत्र में गम्भीर क्षति हो सकती है। भूकम्प जोखिम प्रबन्धन का उद्देश्य ऐसे निवारक उपाय लागू करना होना चाहिए जिससे आवास और उसके आसपास के पर्यावरण पर न्यूनतम प्रभाव पड़े।

इन प्राकृतिक आपदाओं भूस्खलन, बाढ़, भूमि धँसाव और भूकम्प के प्रभाव को नियंत्रित करने के लिए वैज्ञानिक तकनीकों का विवेकपूर्ण उपयोग आवश्यक है। हिमालयी राज्यों में राजमार्ग, रेलवे, जलविद्युत और अन्य बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के सतत निर्माण के लिए व्यापक भूवैज्ञानिक व भू-तकनीकी अध्ययन अनिवार्य हैं, ताकि अयोजित/अवैज्ञानिक क्रियान्वयन से पूरे क्षेत्र के पारिस्थितिक सन्तुलन पर प्रतिकूल प्रभाव न पड़े।

धराली, हर्सिल, केदारनाथ, बर्नावत इत्यादी एवं कुमाऊँ क्षेत्र के कई क्षेत्र इस प्रकार के भयंकर आपदाओं से प्रभावित हुए हैं। वर्ष 2013 के आपदाग्रस्त सभी प्रभावित क्षेत्रों का भू-तकनीकी सर्वेक्षण के पश्चात कई प्रकार के तकनीकी सुझाव, उपचार, रोकथाम एवं विस्तृत ट्रीटमेंट प्लान निवर्तमान सरकार को भेजे गए थे जिसमें से मुख्य एवं महत्वपूर्ण सुझाव-

नदी, नालों एवं सीजनल नालों में किसी भी प्रकार का निर्माण कार्य पर शक्ति से रोक लगाई जाए परन्तु कोई भी सरकार इसको कभी भी गम्भीरतापूर्वक नहीं लेती है जिसके फलस्वरूप हजारों हजार लोगों की जान एवं हजारों मकान इत्यादि ध्वस्त हो जाते हैं, जिसको सरकार काफी हद तक बचाव कर सकती है।

इस सन्दर्भ में माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने 9 मार्च 1995 के अपने निर्णय में आदेश दिया था कि

1. नैनीताल नगर क्षेत्र में बहुमंजिला समूह आवास और वाणिज्यिक परिसरों का निर्माण प्रतिबन्धित होगा।
2. समतल क्षेत्रों में छोटे आवासीय मकान बनाने की अनुमति होगी।

इसके बावजूद भी निर्माण गतिविधियां बन्द नहीं हुई।

इन भूगर्भीय सम्वेदनशील क्षेत्रों में रोड चौड़ाई को बढ़ाने हेतु काफी मात्रा में विस्फोटक का इस्तेमाल किया जाता है जिसके फलस्वरूप चट्टानें काफी कमजोर हो जाती हैं एवं अत्यधिक बारिश होने से भूस्खलन उत्पन्न हो जाते हैं जो कि प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से इन क्षेत्रों में दिखाई दे रहा है।

अत: सड़कों का चौड़ीकरण उस क्षेत्र की भूगर्भीय स्थितियों को अध्ययन करते हुए किया जाए तथा जो क्षेत्र उचित नहीं है उन क्षेत्रों में नदी के साइड कॉलम बनाकर एलिवेटेड रोड का निर्माण वैज्ञानिक तरीके से किया जाए तभी आल वेदर रोड सफल हो सकती है।

कलियासोंड, पाताल गंगा, लामबगड़ इत्यादि एवं कुमाऊँ के कई क्षेत्रों में टनल एवं वैकल्पिक सुझाव वर्ष 2014-15 में दिये गये थे परन्तु सरकार द्वारा उचित कार्रवाई नहीं की गई जिसके फलस्वरूप गम्भीर भूस्खलन की समस्याएं अभी तक आ रही हैं।

इस प्रकार का निर्णय एवं विभाग द्वारा समय-समय पर दी गई भू-तकनीकी सुझावों को नज़रअंदाज नहीं किया जाए तथा इन सुझावों को सभी भूस्खलन एवं भू-धंसाव से प्रभावित क्षेत्रों में प्रभावशाली तरीके से कार्यान्वित किए जाने की जरूरत महसूस की जानी चाहिए जिससे जनहानि को काफी हद तक बचाव किया जा सकता है।

ज्योतिष की बातें- 245

13 जुलाई 2025 को मंगल समराशि तुला में प्रवेश करेगा। मंगल पर गुरु की शुभदृष्टि पड़ेगी और शनि की दृष्टि से मंगल मुक्त हो जाएगा। इस कारण मंगल बलवान रहेगा। मंगल स्वास्थ्य, धैर्य, कर्मठता, साहस, पुरुषार्थ, कर्तव्य परायणता, नेतृत्व क्षमता, दृढ़ निश्चय, युद्ध एवं खेलकूद, शत्रु पर विजय, भूमि-भवन-वाहन का लाभ, यश एवं विद्युत का कारक होता है। फलदीपिका के अनुसार मंगल त्रिषडाय भावों में शुभफल प्रदान करता है। साथ ही कर्क एवं सिंह राशियों के लिए मंगल योगकारक होता है। अत: अगले 44 दिन मंगल सिंह, कर्क, वृषभ व धनु राशि के जातकों को अत्यन्त शुभ फल प्रदान करेगा। यहाँ पर गोचर फल केवल मंगल के गोचर के अनुसार वर्णित किया गया है। अन्य ग्रहों के गोचर का विचार किया गया है। व्यक्ति विशेष के लिये सूक्ष्म विश्लेषण उसकी जन्मकुण्डली, महादशा आदि पर निर्भर करता है।

महालय प्रारम्भ- आश्विन कृष्ण पक्ष प्रतिपदा अर्थात सोमवार 8 सितम्बर 2025 से पितृपक्ष प्रारम्भ हो जाएगा।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार- 135

चुनावी रैलियों में भीड़ की सच्चाई

एक समय था जब अपने प्रिय नेता को सुनने के लिए लाखों की भीड़ अपने आप ही इकट्ठा हो जाती थी। अब समय बदल गया है। एक-एक व्यक्ति को जुटाने के लिए बहुत व्यवस्था करनी पड़ती है। सभी को दिनभर की दिहाड़ी 500-700 देनी पड़ती है, दोपहर का भोजन भी उनको देना पड़ता है और सभा स्थल तक उनको लाने ले जाने की व्यवस्था भी करनी पड़ती है। इस प्रकार भीड़ में एक आदमी को लाने के लिए कम से कम, औसत रूप से, एक हजार रुपए का खर्च तो आता ही है। इस प्रकार एक लाख की भीड़ इकट्ठी करने के लिए 10 करोड़ की आवश्यकता पड़ेगी और 5 लाख की भीड़ जुटानी हो तो 50 करोड़ रुपयों की आवश्यकता पड़ेगी। इतना पैसा खर्च करना कोई बड़ी बात नहीं है क्योंकि आजकल सभी राजनीतिक पार्टियों के पास हजारों करोड़ रुपया होता है।

इस भीड़ में अधिकतर महिलाएं ही होती हैं। जो पुरुष होते भी हैं वे या तो मजदूर होते हैं या फिर बेरोजगार होते हैं। कोई समझदार, पढ़ा-लिखा नौकरी-पेशे वाला, प्रतिष्ठित व्यक्ति ऐसी चुनावी रैलियों में कभी नहीं जाता। भीड़ में यह भी देखा जाता है कि किसी भी पार्टी की रैली हो लेकिन भीड़ में वही लोग उपस्थित होते हैं। आज पंजे का झण्डा उठाएंगे तो कल कमल का झण्डा उठाएंगे। परसों किसी और का झण्डा उठाएंगे। रैली अलग-अलग पार्टियों की लेकिन भीड़ में वही लोग। बस भीड़ को अलग-अलग रैलियों में अलग-अलग नारों को रटना पड़ता है।

इस प्रकार यह बात एकदम स्पष्ट है कि रैली की भीड़ को देखकर राजनीतिक पार्टियों की अथवा किसी नेता की लोकप्रियता का अनुमान लगाना सर्वथा गलत है।

-ओंकार नाथ कोष्टा

मामलों की जांच-पड़ताल होती रहेगी
जिला पंचायत नैनीताल का मामला

नैनीताल। जिला पंचायत नैनीताल में चुनाव को लेकर जिस प्रकार की गतिविधि यां हुई उसकी जांच-पड़ताल बनी हुई है। चूंकि मामला इतना अधिक बबाल और उलझन भरा है। ऊपर से न्यायालय की नज़र है। ऐसे में पूरा प्रकरण किस मोड़ पर जाकर रुकेगा अभी कहना जल्दबाजी है। चुनाव फैसला तो हो गया था लेकिन पुलिस और प्रशासन क्या करता रहा और चुनाव आयोग क्या करता है, इस बात को लेकर कोर्ट सख्त है। सुनवाई में खण्डपीठ ने सवाल किये कि वोट न डालने वाले 5 जिला पंचायत सदस्यों पर क्या कार्रवाई की गई है। इसी प्रकार अन्य सवालों से घिरे अधिकारी अपनी सफाई दे रहे हैं।

गुप्ता बन्धुओं का मामला

देहरादून। मनी लॉन्ड्रिंग के मामले में गुप्ता बन्धुओं से प्रर्वतन निदेशालय की टीम सतर्क है। ईडी गुप्ता बन्धुओं औश्र उनके सहयोगियों के ठिकानों पर छापे मार चुकी है। दिल्ली से देहरादून आई टीम ने उनके निवास पर कई घण्टे जांच की। बताया जाता है कि दोनों भाईयों में से एक घर पर मौजूद मिला। दूसरा अस्पताल में भर्ती है। बताते चलें कि लगातार विवाद में चल रहे गुप्ता बन्धुओं की कई कम्पनियों की जांच जारी है। इनके खाते वगैरह कब्जे में हैं।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

जोहार शौका वरिष्ठ नागरिक समिति की वार्षिक आमसभा

देहरादून। जोहार शौका वरिष्ठ नागरिक समिति की वार्षिक आम सभा का आयोजन एफ.आई.आर. के साईंटिफिक हॉस्टल सभागार में हुआ। जिसमें पूर्व कार्यकारिणी द्वारा वर्षभर की गतिविधियों तथा आय व्यय का लेखा जोखा प्रस्तुत किया गया।

इस अवसर पर कार्यकारिणी का तीन साल की अवधि पूर्ण होने पर नई कार्यकारिणी का गठन एवं नव निर्वाचित पदाधिकारियों का चयन सर्व सम्मति से सफलतापूर्वक सम्पन्न किया गया और उन्हें सम्मानित किया गया। नव निर्वाचित पदाधिकारियों में सर्वश्री गणेश सिंह मर्तोलिया अध्यक्ष, नवराज सिंह पांगती, उपाध्यक्ष, ललित सिंह मर्तोलिया सचिव, भवान सिंह रावत कोषाध्यक्ष एवं श्रीमती नारायणी पांगती, देवेन्द्र सिंह जंगपांगी, डॉ. विनोद सिंह टोलिया, डॉ. नारायण सिंह धर्मशक्तू व चन्द्र सिंह निखुर्पा कार्यकारणी सदस्य बने। संरक्षक के रूप में सुरेन्द्र सिंह पांगती, डॉ. भगत सिंह बर्फाल एवं डाक्टर गोविन्द सिंह जंगपांगी रहेगें।

सभा के अन्त में नवनिर्वाचित कार्यकारिणी ने जनहित एवं समाज हित में निरन्तर कार्य करने के लिए भरसक प्रयास का आश्वासन दिया।

मुनस्यारी कालेज का 25वां स्थापना दिवस

मुनस्यारी। डॉ.आर.एस.टोलिया राजकीय महाविद्यालय का 25वां स्थापना दिवस धूमधाम से मनाया गया। आयोजन में मुख्य वक्त डॉ. प्रशान्त जोशी ने प्रदेश के पूर्व मुख्य सचिव और पूर्व सूचना आयुक्त आर.एस.टोलिया के जीवन संघर्ष पर प्रकाश डालते हुए छात्रों से उनसे प्रेरणा लेने की अपली की।

गोलज्यू महोत्सव को लेकर बैठक

अल्मोड़ा। रंगकर्मी अमरनाथ नेगी की अध्यक्षता व तारा चन्द्र जोशी के संचालन में गोलज्यू महोत्सव को लेकर बैठक हुई। तय किया गया कि 30 अक्टूबर से 5 नवम्बर तक मल्ला महल में यह आयोजन किया जाएगा। इसे भव्य बनाने के लिये सदस्यों ने अपने सुझाव दिये।

पैरामिलिट्री बलिदानी को मिले शहीद दर्जा

अल्मोड़ा। उत्तराखण्ड पैरामिलिट्री कल्याण संगठन की बैठक में सदस्यों ने कहा कि लम्बे समय से पूर्व पैरामिलिट्री सदस्यों की ओर से समस्याओं के निराकरण की मांग की जा रही है लेकिन अब तक समस्याओं का निदान नहीं हो सका। कहा पैरामिलिट्री के बलिदानियों को भी शहीद का दर्जा मिलना चाहिये। मण्डल अध्यक्ष मनोहर सिंह नेगी ने कहा कि पैरामिलिट्री फोर्स के साथ सौतेला व्यवहार किया जा रहा है। इसके सिविल रूल से बाहर कर पृथक नियम बनाने, सीजी एचएस सुविधा मिलनी चाहिये।

गंगोलीहाट में खजान और कांग्रेस सक्रिय

गंगोलीहाट। क्षेत्र में कांग्रेस पार्टी और पूर्व दर्जा मंत्री खजान गुड्डू बेहद सक्रिय दिखाई दे रहे हैं। कांग्रेस के इस गढ़ में भाजपा के दबदबे से मौका चूकी कांग्रेस चाहती है कि वह फिर से खोया सम्मान पाए इसके लिये पार्टी संगठन बराबर गतिविधयां कर रहा है। इसमें मुख्य भूमिका नारायण सिंह बोहरा की है। युवा नेता नारायण पिछले दो निकाय चुनाव में अपनी ताकत भी दिखा चुके हैं और युवाओं को लगातार पार्टी से जोड़ते हुए रणनीति बनाते रहे हैं।

इधर प्रदेश भर में पार्टी के जारी अभियान के तहत गंगोलीहाट में भी कांग्रेस ने भाजपा सरकार पर मनमानी का आरोप लगाते हुए प्रदर्शन किया। इसमें पूर्व दर्जा मंत्री खजान गुड्डू के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं की भीड़ देखी गई। माना जा रहा है कि 2027 विस चुनाव को देखते हुए संगठन अब कोई मौका नहीं चूकना चाहता है।

टनकपुर पालिका मामला सुलटा नहीं

अध्यक्ष ने लगाया ईओ पर आरोप

सभासदों ने कमिश्नर को भेजा इस्तीफा

भुगतान को लेकर ठेकेदार नाराज हैं

टनकपुर। नगर पालिका टनकपुर का मामला सुलटने का नाम नहीं ले रहा है। मुख्यमंत्री विधानसभा क्षेत्र के टनकपुर पालिका में ईओ और पालिका अध्यक्ष के बीच तालमेल न होने का परिणाम पूरे पालिका क्षेत्र को भुगतना पड़ा है। बताया जाता है कि कुछ भुगतानों के मामले को लेकर बात बिगड़ गई थी। नगर पालिका गठन के बाद से चैयरमैन अपने घर पर बनाए गये कैम्प कार्यालय पर ही बैठ रहे हैं और पालिका में आन्दोलन हो रहा है। पूरे प्रदेश में यह अपने तरह का पहला मामला है। इस बीच तमाम आरोप लगाते हुए 5 सभासदों ने ईओ के माध्यम से कमिश्नर को अपना त्यागपत्र भेज दिया। त्यागपत्र देने वाले सभासदों दिलदार अली, वकील अहमद, चर्चित शर्मा, आशा भट्ट, बबीता वर्मा ने आरोप लगाया कि उनकी ओर से दिए गए प्रस्तावों और सुझावों पर अमल नहीं किया जा रहा है। इसके अलावा भुगतान न होने की बात को लेकर ठेकेदारों की नाराजी देखी गई है।

इस बीच नगर पालिका चैयरमैन विपिन कुमार ने पत्रकार वार्ता करते हुए कहा कि वह पूरे क्षेत्र को चमकाना चाहते हैं लेकिन ईओ द्वारा किसी प्रकार का सहयोग नहीं किया जा रहा है। कहा कि पालिका बोर्ड हर वार्ड में विकास कार्यो। को गति देने के लिये प्रतिबद्ध है। विपक्षी सभासद विकास न होने का आरोप लगाकर भ्रम फैलाने का काम कर रहे हैं। इन्टरनेट मीडिया से भ्रम व दुष्प्रचार किया जा रहा है। चैयरमैन विपिन कुमार ने कहा कि सीएम पुष्कर सिंह धामी व शहरी विकास विभाग निकायों के विकास के लिये प्रतिबद्ध है। दूसरी पालिकाओं के अच्छे कामों को देखने सीखने के लिये भ्रमण कार्यक्रम में वह भी थे। वह चाहते हैं क्षेत्र का अधिकाधिक विकास हो।

हल्द्वानी में वार्डवार जनसमस्याएं सुनवाई

हल्द्वानी। जिलाधिकारी वन्दना सिंह के निर्देशानुसार नगर निगम क्षेत्र में जनता की समस्याओं के त्वरित समाधान हेतु वार्डवार जन सुविधा शिविरों का आयोजन कर समस्याओं को सुना जा रहा हे। साथ ही इन शिविरों में लोगों को सरकारी योजनाओं का मौके पर ही लाभ दिया जा रहा है।

प्रशासन द्वारा चलाए गए इन शिविरों की सराहना की जानी चाहिये क्योंकि कई बार वार्डों में सड़क, फुटपाथ, पानी, बिजली से लेकर अन्य समस्याएं होती हैं जिसके लिये कई लोगों को यह पता नहीं होता है कि इनका समाधान किस प्रकार किया जाए। ऐसे में यदि अधिकारी गण मौके पर सुनवाई कर समाधान कर दें तो इससे बेहतर क्या होगा। शिविर में सिटी मजिस्ट्रेट सहित तमाम कर्मचारी थे।

परिक्रमा

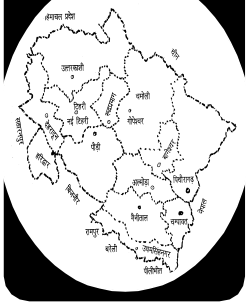

सहमति न बनने पर रानीखेत व्यापार मंडल चुनाव स्थगित

रानीखेत। नगर व्यापार मण्डल की कार्यकारिणी गठन में आ रहे गतिरोध एवं आपत्तियों का निराकरण करने के उद्देश्य से जिला व्यापार मण्डल एवं वर्तमान चुनाव समिति द्वारा रानीखेत के व्यापारियों की आम बैठक आयोजित की लेकिन सहमति न बनने पर व्यापार मण्डल चुनाव स्थगित कर दिए गए।

निवर्तमान कार्यकारिणी के आय-व्यय के स्पष्टीकरण को बैठक में स्वीकार नहीं किया गया। कुछ व्यापारियों ने जिलाध्यक्ष मोहन नेगी को अधिकार प्रदान किया किन्तु कुछ व्यापारी सहयोग करेन के लिये तैयार नही नही दिखे। ऐसे में पूरे चुनाव को ही स्थगित करते कर दिया गया। उल्लेखनीय है कि व्यापार मण्डल के मामले को लेकर पहले से ही काफी सवाल उठे थे, जिस पर एक प्रयास इस बैठक में किया गया था।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

क्यों भुला दिया.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

चीख उठता है कि हे प्रभु, मैं तेरे किस रूप को मनाऊँ, कि तेरा वह रूप मुझे अतिति देवता के पास पहुँचा दे और मै। अपने माँ बाप को फिर से देख सकूं-

कस्य नूनं कतमस्यामृतानाम्।
मनामहे चारू देवस्य नाम।
कोनो महया अदितये पुनदत्।
पितरं च दृशेयं मातरं च।

अपनी ही भावनाओं से बहता हुआ शुन:शेप अग्नि को मनाना शुरू कर देता है कि हे अग्नि, तुम ही मुझे अदिति के पास पहुँचा दो जहाँ जाकर मैं अपने माता पिता से फिर से मिल लूं-

अग्नेर्वयं प्रथमस्यामृतानाम्।
मनामहेचारु देवस्य नाम।
स नो महया अदितये पुनर्दात्।
पितरं च दृशेयं मातरं च।

यह तो हुई गाथा से जुड़ा एक ऐसा इतिहास जो अब हटा होगा तो उसने देखने सुनने वाले के रोंगटे खड़े कर दिये होंगे। अब क्यों न इसके साथ जुड़ी कुछ ऐतिहासिक समस्याओं से दो चार हुआ जाए जिनका सामना करने से हम अपनी किसी आभिजात्यता के अहं बोध के मारे कतरा जाते हैं पर जिन पर बहस किये बिना हमारा अपनी सभ्यता के विकास का अध्ययन अधूरा रहने वाला है। शुन:शेप की जो कहानी महिदास ऐजरेय ने ऐतरेय ब्राह्मण में दी है और जिसकी पुष्टि खुद शुन:शेप के द्वारा रचे मन्त्रों से होती है, वह सब पढ़ने के बाद सवाल उठता है कि क्या भारत में नरमेध की यानी यज्ञ में मनुष्य की बलि देने की प्रथा थी? शुन:शेप की कहानी इतनी साफ है कि अगर हम जानबूझ कर खुद को उसकी तथाकथित आध्यात्मिक व्याख्याओं में न फंसा दें तो यह सवाल एकदम सीधा और सटीक तरीके से हमारी आंखों में झांकता नजर आता है। पर जवाब देने में जल्दबाजी से परहेज ही हमें पूरे परिदृष्य को समझने में मदद करेगा। जल्दबाज जवाब यह हो सकता है कि देवराज वसिष्ठ जैसा कुलगुरु शुन:शेप की बलि देने की अनुमति दे चुका था, इसी से निष्कर्ष निकला आता है कि पुराने भारत में नरमेध प्रथा रही होगी। पर हम उसे जानबूझ कर जल्दबाजी से भरा जवाब कह रहे हैं क्योंकि जिस त्वरा से विश्वामित्र ने शुन:शेप को बचाया और शुन:शेप की इस घटना से पहले और बाद में चूंकि किसी भी यज्ञ में नरमेघ का कोई इतिहास या प्रथा ही नहीं मिलती, अत: शुन:शेप काण्ड को भारत में यज्ञ परम्परा की पहली और आखिरी दुर्घटना माना जा सकता है जिसे एक तेजस्वी महापुरुष के सामयिक और सशक्त हस्तक्षेप से घटित नहीं होने दिया गया।

यानी भारत की यज्ञ परम्परा के इतिहास में एक बार नरमेध का प्रयास किया गया जिसे ध्वस्त कर दिया गया। यानी नरमेध की प्रथा जैसा कुछ नहीं था। पर इसके साथ जुड़ा एक और ऐतिहासिक सन्दर्भ भी कोई कम महत्वपूर्ण नहीं शुन:शेप को विश्वामित्र ने अपना पुत्र बना लिया और शुन:शेप ने खुद को देवरात विश्वामित्र कहना शुरू कर दिया। पर शुन:शेप को बचाने का यह विराट कर्म भी विश्वामित्र की अपनी कुछ सन्ततियों को पसन्द नहीं आया और उन्होंने खुद को विश्वामित्र से अलग कर उनके पिता (या कुछ विवरणों मुताबिक पितामह) कुशिक के साथ जोड़कर अपना गोत्रनाम कौशिक कर लिया।

जो शुन:शेप को बचाने के पक्षधर थे वे वैश्वामित्र रहे, पर जो इस कर्म के विरोध में चले गये वे कौशिक कहलाने लगे। जाहिर है कि नरमेध बेशक न हुआ हो, पर उसके समर्थन की एक परम्परा चल पड़ी जिसकी आध्यात्मिक अभिव्यक्ति पुरुषसूक्त में हुई जहाँ शुन:शेप की तरह सांसारिक नहीं, बल्कि शुद्ध आध्यात्मिक सन्दर्भों में पुरुषमेघ का यज्ञीय वर्णन मिलता है। दूसरी ओर भारत की कई लोकपरम्पराओं में कई तरह से छोटी-बड़ी पशु-बलियों का चलन देखने में आता है जिसका रिश्ता कहीं न कहीं नरमेध के स्थानापन्न प्रसंग के रूप में होता है।

विश्वामित्र की एक सन्तति परम्परा का शुन:शेप काण्ड से असहमत होना, खुद को विश्वामित्र नाम से अलग कर कौशिक गोत्रनाम से जोड़ लेना एक खास दृष्टिकोण का परिचायक जरूर है, पर उतनी ही महत्वपूर्ण परम्परा यह भी है कि कौशिक गोत्र को प्रामाणिक ब्राह्मण गोत्र नहीं माता जाता और भार्गव और कश्यपों की तरह उनके ब्राह्मणत्व की पात्रता पर कई बार कई तरह की उंगलियां उठा दी जाती हैं। यानी अगर कौशिकों ने नरमेध रुकवाने के विश्वामित्र प्रयास को मान्यता नहीं दी तो कौशिकों के इस कदम ने उन्हें ब्राह्मण परिवार में ही अलग थलग कर दिया, यही अपने आप में इस बात का प्रतीक है कि इस देश में नरमेध के प्रयास की इस घटना को न यश मिला और न ही अनुसरण।

पर इस समस्त कथा में से विश्वामित्र का अद्भुत चरित्र निखर कर सामने आया है। खुद को ब्राह्मण मनवाने के लिए विश्वामित्र ने कितना प्रखर बौद्धिक तप किया, शुन:शेप को बचाने के लिये उन्होंने कितना बड़ा कदम विपरीत परिस्थितियों के बीच सफलतापूर्वक उठा लिया और अपनी सन्तानों के विरोध और बहिष्कार के बीच शुन:शेप को अपना पुत्र बनाकर उसे अपना कुलनाम दे दिया, इस तरह के अद्भट व्यक्तित्व की जरा कल्पना तो कीजिये। पर जिसने विश्वामित्र जैसे महाक्रान्तिकारी को अपने पर फिदा हो जाने को विवश किया, क्या वह शुन:शेप कोई सामान्य व्यक्तित्व रहा होगा? शुन:शेप के सूक्त गवाही दे रहे हैं कि वह असामान्य व्यक्ति था। फिर क्यों हमने उसे इस तरह भुला दिया?

(साभार नवभारत टाइम्स)

पदोन्नति और स्थानान्तरण की मांग पर राजकीय शिक्षकों की गर्जना

उत्तराखण्ड में राजकीय शिक्षकों ने पदोन्नति और स्थानान्तरण की मांग पर गर्जना की है। अपनी ताकत दिखाते हुए सभी शिक्षकों ने सरकार से न्यायपूर्ण कार्य करने की अपील करते हुए अपनी पीड़ा व्यक्त की। राज्य के जिलों में शिक्षक संगठनों के बैनर तले आन्दोलन पर उतरे शिक्षकों के कारण शिक्षण कार्य भी प्रभावित हुआ है।

सरकार के खिलाफ नारेबाजी कर रहे शिक्षकों का कहना है कि आन्दोलन समाप्ति को दबाव बर्दाश्त नहीं किया जायेगा। पदोन्नति और स्थानान्तरण प्रक्रिया की पारदर्शिता से पहले कोई मानने वाला नहीं है।

शिक्षक संघ के आह्वान पर चल रहे आन्दोलन में जिला मुख्यालय पहुंचे शिक्षकों ने सीईटो कार्यालय और कलेक्ट्रेट के बाहर भी धरना दिया और कहा कि शिक्षकों की वर्षों से लम्बित मांगों का निराकरण करने के बजाय उन्हें बार-बार धोखा दिया जाता है।

15 सितम्बर से दो धामों के लिये फिर शुरू होगी हेलिकॉप्टर सेवा

देहरादून। मानसून सीजन की समाप्ति पर जौलीग्रान्ट हेलिपैड से 15 सितम्बर से एमआई 17 एक बार फिर अपनी नियमित उड़ान भरेगा। प्रतिदिन दो उड़ानें संचालित की जाएंगी। एक उड़ान में कुल 20 श्रद्धालु जौलीग्रान्ट से दो धामों के लिए उड़ान भरेंगे। एसडीआरएफ मुख्यालय जौलीग्रान्ट के पास स्थित हेलिपैड से इस यात्रा सीजन में रुद्राक्ष एविएशन कम्पनी द्वारा तीन मई से दो धामों के लिए उड़ानें शुरू की गई हैं। यह उड़ानें बरसात शुरू होने से पहले 17 जून तक संचालित की गई थी। बरसात के कारण 18 जून से उड़ानों पर रोक लगा दी गई थी। अब फिर से 15 सितम्बर से उड़ानें शुरू की जा रही हैं। इस बार दीपावली का त्यौहार पहले है, जिस कारण धामों के कपाट पहले बन्द हो जाएंगे। जिस कारण हेलिकॉप्टर उड़ानें 18 अक्टूबर तक ही संचालित की जाएंगी। कम्पनी के अधिकारियों ने कहा कि जौलीग्रान्ट से दो धामों की यात्रा के लिये श्रद्धालुओं में उत्साह रहा है, जिस कारण कम्पनी लगातार तीसरे साल यह उड़ानें संचालित कर रही है।

थल क्षेत्र में बाहरी व्यक्ति को व्यापार की अनुमति न दी जाए

थल। थाना दिवस पर हुई बैठक में क्षेत्रवासियों ने कहा कि आपराधिक गतिविधियों को देखते हुए थल क्षेत्र में बाहरी व्यक्ति को व्यापार की अनुमति न दी जाए। सामुदायिक सम्पर्क समूह, व्यापार मण्डल, जनप्रतिनिधियों, टैक्सी यूनियन और महिला मंगल दल सदस्यों के साथ थानाध्यक्ष शंकर सिंह रावत की अध्यक्षता में हुई बैठक में कहा गया कि बाहरी प्रदेश से आए लोगों का पूर्ण सत्यापन करने, खनन पर लगाम सहित रात्रि पुलिस गश्त हो।

कुंजनपुर से कालेज तक सड़क निर्माण का शुभारम्भ

गंगोलीहाट। राजकीय महाविद्यालय तक सड़क की मांग को लेकर लम्बे समय से उठ रही आवाज के बाद कुंजनपुर से सड़क का शुभारम्भ हो चुका है। इससे आने वाले दिनों में विद्यार्थियों समेत क्षेत्र वासियों को सुविधा होगी। विधायक फकीर राम टम्टा ने सड़क कार्य का शुभारम्भ करते हुए कहा कि समय से यह कार्य पूर्ण हो जाएगा। इस अवसर पर नगर पालिका अध्यक्ष विमल रावल सहित तमाम लोग मौजूद थे।

Enjoy Beauty of
Himalaya at
MARTOLIA LODGE
Family Guest House- Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287

घर से बाहर अपनों का साथ
होटल लक्ष्य इन
मदकोट सम्पर्क
नरेन्द्र सिंह रावत 7351285555

जंगपांगी जनरल स्टोर
मदकोट रोड, दरांती मनुस्यारी
(सीमेन्ट, पेण्ट, हार्डवेयर सामग्री के लिये सुलभ स्थान मो.- 9760342346

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
मो.न.
8958525979,
9411134775
नानासेम, मुनस्यारी
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
फोन सम्पर्क-
05961-222236
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

नन्दामाई के भक्तों का हुजूम उमड़ा

नन्दा-सुनन्दा उत्सव की धूम मची

उत्तराखण्ड की आराध्य कुलदेवी नन्दा का उत्सव धूमधाम से मनाया जा रहा है। नन्दामाई के भक्तों का हुजूम यातायात की दिक्कतों के बावजूद अपनी परम्पराओं के लिये उमड़ा। अल्मोड़ा, चम्पावत, नैनीताल समेत अन्य स्थानों पर होने वाले नन्दा-सुनन्दा उत्सव की धूम रही। इसके अलावा भी आठू-सातू की धूम सहित स्थानीय मेलों की परम्परा देखने को मिल रही है लेकिन देखादेखी की चपेट में इनका स्वरूप बदलता जा रहा है। मेलों को महोत्सव नाम देते हुए मंच सजाकर नृत्य-गीत के प्रायोजित कार्यक्रमों की परम्परा को पोषित किया गया है।

नैनीताल में विधिविधान के साथ राम सेवक सभा के तत्वावधान में हुए आयोजन में ज्योलीकोट स्थित चोपड़ा ग्राम से कदली वृक्ष का नगर भ्रमण के बाद नन्दा सुनन्दा की मूर्तियों का निर्माण किया गया। परम्परागत वेशभूषा में नृत्यगीत करते लोगों ने पूरे उत्सव में भागीदारी की। नैनीताल में एक अच्छी बात यह रही कि इस बार नन्दादेवी की प्रतिमा के आगे से सेल्फी लेने पर प्रतिबन्ध लगाया गया था। मन्दिर परिसर में पहले से ही रील बनाने, फोटोग्राफी, वीडियोग्राफी पर प्रतिबन्ध है। कार्यक्रम में रामसेवक सभा के अध्यक्ष मनोज साह, प्रबन्धक विमल चौधरी, मुकेश जोशी, अशोक साह, कमलेश ढौंढियाल, गोधन बिष्ट सहित पूरी टीम जुटी रही।

नैनीताल, भवाली, बागेश्वर, चम्पावत, रानीखेत में भी नन्दादेवी मेले की परम्परागत धूम मची। जोहार सहित

डीडीहाट में सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने मन मोहा

नैनीताल में सेल्फी लेने पर प्रतिबन्ध लगाया

गंगावली में आठू-सातू की धूम, सोर में रंगत

रकम ग्राम के सूर्य मन्दिर में साठी मेला

ऋषिपंचमी पर बेरीनाग व गणाई में मेला

तीन दिवसीय मोस्टमानू मेले में उमड़े लोग

झूमाधुरी उत्सव में देवीरथ यात्रा

तमाम जगहों पर नन्दामाई के भक्त जुटे। उच्चहिमालय क्षेत्र से ब्रह्मकमल लाने से लेकर पूजन तक तक की पूरी प्रक्रिया में उत्साह देखा गया। चमोली में जात/यात्राओं का दौर चल पड़ा है। साथ नन्दा राजजात की तैयारी भी है। डीडीहाट में नन्दा महोत्सव के आयोजन पर सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने मन मोहा। आमंत्रित कलाकारों के साथ ग्रामीणों की खासी भागीदारी देखी गई।

आठू-सातू के त्यौहार को लेकर गंगावली क्षेत्र में धूम मंची। गंगोलीहाट और बेरीनाग के जिन ग्रामों में पहले से यह आयोजन होते आए हैं उनमें युवाओं को जोड़ते हुए दिन-रात बड़े आयोजन किये गये। सोर घाटी के मुख्यालय पिथौरागढ़ में रामलीला प्रबन्धकारिणी समिति द्वारा नई पीढ़ी को इस उत्सव से जोड़ने के लिये उत्सव आयोजित किया। साथ ही कार्यशाला का आयोजन करते हुए बच्चों को इसके बारे में बताया गया।

चम्पावत जिले के पाटी ब्लाक के ग्राम पंचायत रकम स्थित शिवादित्य सूर्य मन्दिर में तीन दिवसी साठी मेले पर क्षेत्र वासियों ने भागीदारी की और भगवती का डोला निकाला गया। ऋषि पंचमी पर बेरीनाग का प्राचीन मेला उत्साह के साथ मनाया गया। नाग मन्दिर में भक्तगणों ने मनोतियां मांगी। इसके अलावा झोड़ा चांचरी के साथ मस्त खेल लगाए गए। इसी प्रकार गणाई गंगोली के नवनिर्मित नौलिंग मन्दिर चौकी अट्ठीगांव में प्रथम मेला आयोजित किया गया। जिसमें क्षेत्र वासियों ने भरपूर सहयोग दिया। सोरघाटी के मोस्टमानू मेले में लोग उमड़े। तीन दिवसीय आयोजन में स्थानीय कलाकारों ने अपनी प्रस्तुतियां दीं और विधायक सहित स्थानीय जनप्रतिनिधि उपस्थित थे। लोहाघाट के ग्राम पंचायत पाटन पाटनी में झूमाधुरी उत्सव में देवीरथ का आकर्षण रहा।

नन्दाष्टमी की हार्दिक शुभकामनाएं-
बाला सिंह मर्तोलिया
श्रीमती माया मर्तोलिया
मधुवन इनक्लेव फेस-1
रेशम बाग के पास,
गैस गोदाम रोड
कुसुमखेड़ा, हल्द्वानी

एम.डी.एम.
एजूकेशनल
एकेडमी
टनकपुर

न तेरा न मेरा Thats
APNA GHAR चौकोड़ी
HOTEL RESTRO BANQUET
YOGA MEDITATION | LIVE MUSIC | HOMELY FOOD | BIRTHDAY WEDDING
मो.- 9458920379, 6396098804
Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)
पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

Hotel
Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

Hayat Paradise
Bus Station
Munsiari
Ph. 09411556700, 9997733070

धमोत
होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
www.mountainheights.in
मो. 9760007148

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।
सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल
9458961490, 9411770280, 9411301014,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)